International Journal of Social Science and Humanities
www.humanitiesjournals.com
ISSN: 2664-8628
Received: 20-09-2026, Accepted: 20-10-2026, Published: 04-11-2026
Volume 8, Issue 4, 2026, Page No. 67-71

बिरहोर जनजाति के विविध संकेतकों में महत्वपूर्ण सुधार: छत्तीसगढ़ राज्य के विशेष पिछड़ी जनजाति क्षेत्र का एक अध्ययन

विजय कुमार जगत, डॉ. राकेश कुमार गुप्ता
शोधार्थी, सामाजिक विज्ञान विभाग, डॉ. सी. व्ही. रमन विश्वविद्यालय, कोटा, बिलासपुर, छत्तीसगढ़, भारत
शोध निर्देशक, सह–प्राध्यापक सामाजिक विज्ञान विभाग, डॉ. सी. व्ही. रमन विश्वविद्यालय, कोटा, बिलासपुर, छत्तीसगढ़
DOI: https://doi.org/10.66856/ijssh.2026.8.4.8157

सारांश
बिरहोर जनजाति छत्तीसगढ़ की विशेष पिछड़ी जनजाति (PVTG) है, जो परंपरागत रूप से वनोपज संग्रह, शिकार, रस्सी निर्माण और बांस शिल्प पर निर्भर रही है। ऐतिहासिक अवसंरचनात्मक कमी, भौगोलिक दूरी, शिक्षा एवं स्वास्थ्य सेवाओं तक सीमित पहुँच तथा आर्थिक असुरक्षा ने इस समुदाय के सामाजिक, आर्थिक, शैक्षिक एवं स्वास्थ्य संकेतकों को कमजोर बनाए रखा है। प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य यह ज्ञात करना है कि बिरहोर जनजाति के विविध संकेतकों—जैसे आय, रोजगार, आवास, शिक्षा, स्वास्थ्य, पोषण, साक्षरता, शिशु मृत्यु दर, जीवन प्रत्याशा, वित्तीय समावेशन एवं सामाजिक सुरक्षा—में क्या स्तर का सुधार हुआ है। अध्ययन में सर्वेक्षण विधि तथा पांच–स्तरीय लाइकर्ट पैमाने का प्रयोग किया गया है। प्राथमिक आंकड़े बिरहोर परिवारों से संरचित प्रश्नावली एवं साक्षात्कार के माध्यम से एकत्र किए गए हैं, जबकि द्वितीयक आंकड़े जनगणना, राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण, शोध पत्रों एवं सरकारी रिपोर्टों से लिए गए हैं। अध्ययन के परिणाम दर्शाते हैं कि सरकारी योजनाओं—जैसे आयुष्मान कार्ड, पोषण वाटिका, मध्याह्न भोजन, छात्रवृत्ति, आंगनबाड़ी, प्रधानमंत्री जनजातीय उत्कर्ष मिशन (PM & JANMAN), स्वास्थ्य कैंप, मनरेगा तथा पशुपालनकृने बिरहोर समुदाय के विविध संकेतकों में सुधार की दिशा में सकारात्मक भूमिका निभाई है। तथापि, यह सुधार असमान और अपर्याप्त है। शिक्षा एवं स्वास्थ्य अवसंरचना की कमी, दूरी, जागरूकता की कमी और आर्थिक असुरक्षा ने इन संकेतकों के सुधार को सीमित किया है। अध्ययन निष्कर्ष निकालता है कि बिरहोर जनजाति के विविध संकेतकों में सुधार की प्रक्रिया शुरू हुई है, परंतु सतत एवं समावेशी विकास हेतु स्थानीय भाषा में शिक्षा, पोषण हस्तक्षेप, स्वास्थ्य अवसंरचना और सामुदायिक भागीदारी आवश्यक है।

मूल शब्दः बिरहोर जनजाति, विविध संकेतक, सामाजिक विकास, आर्थिक सुधार, शैक्षिक प्रगति, स्वास्थ्य सूचकांक और पोषण–स्तर

प्रस्तावना

भारत की जनजातीय आबादी में कुछ समुदाय ऐसे हैं जो ऐतिहासिक, भौगोलिक और सामाजिक–आर्थिक कारणों से विकास की मुख्यधारा से दूर रहे हैं। बिरहोर जनजाति ऐसी ही एक विशेष पिछड़ी जनजाति है, जिसे भारत सरकार द्वारा विशेष पिछड़ी जनजाति अर्थात PVTG के रूप में वर्गीकृत किया गया है। छत्तीसगढ़ में यह समुदाय मुख्यतः जंगलों एवं जनजातीय क्षेत्रों में निवास करता है और परंपरागत रूप से वनोपज संग्रह, शिकार, रस्सी निर्माण तथा बांस शिल्प पर निर्भर रहा है।

बिरहोर समुदाय के सामाजिक, आर्थिक, शैक्षिक एवं स्वास्थ्य संकेतक ऐतिहासिक रूप से कमजोर रहे हैं। एक अध्ययन में बिरहोर एवं पहाड़ी कोरवा समुदाय में 80 प्रतिशत निरक्षरता, अपर्याप्त स्वास्थ्य एवं शिक्षा सुविधाएं, बाल विवाह और गरीबी पाई गई। इसी प्रकार, PVTG सर्वेक्षण में बिरहोर समुदाय की साक्षरता दर 37.4 प्रतिशत पाई गई, जो राज्य औसत 73 प्रतिशत से काफी कम है।

पोषण एवं स्वास्थ्य के क्षेत्र में भी बिरहोर समुदाय की स्थिति चिंताजनक है। एक अध्ययन में बिरहोर वयस्क महिलाओं में कुपोषण की दर 60 प्रतिशत पाई गई। बच्चों में भी कुपोषण की दर अधिक है; धरमजयगढ़ ब्लॉक के अध्ययन में 30.2 प्रतिशत बच्चे मध्यम और 11.1 प्रतिशत गंभीर रूप से कुपोषित पाए गए।

इन समस्याओं के समाधान हेतु छत्तीसगढ़ शासन तथा भारत सरकार ने अनेक कल्याणकारी एवं विकास योजनाएं चलाई हैं। इनमें आयुष्मान कार्ड, पोषण वाटिका, मध्याह्न भोजन, छात्रवृत्ति, आंगनबाड़ी, प्रधानमंत्री जनजातीय उत्कर्ष मिशन (PM & JANMAN), स्वास्थ्य कैंप, टीकाकरण, मनरेगा, पशुपालन तथा वित्तीय समावेशन कार्यक्रम शामिल हैं।

इन योजनाओं का उद्देश्य बिरहोर परिवारों को स्वास्थ्य, शिक्षा, पोषण, आजीविका और सामाजिक सुरक्षा के क्षेत्र में सुधार लाना है। फिर भी, यह महत्वपूर्ण प्रश्न है कि क्या इन योजनाओं ने बिरहोर समुदाय के विविध संकेतकों में सार्थक सुधार लाया है। इसी संदर्भ में प्रस्तुत अध्ययन बिरहोर जनजाति के विविध संकेतकों में सुधार का मूल्यांकन करता है।

साहित्य समीक्षा (Review of Literature) – भारत सरकार, जनजातीय कार्य मंत्रालय (2015): PVTG विकास योजना में आजीविका, स्वास्थ्य, पोषण और शिक्षा जैसे सामाजिक संकेतकों में सुधार को प्राथमिकता दी गई है। Zenodo (2024): बिरहोर एवं पहाड़ी कोरवा समुदाय में 80 प्रतिशत निरक्षरता, अपर्याप्त स्वास्थ्य एवं शिक्षा सुविधाएं, बाल विवाह और गरीबी पाई गई। TICI Journals (2017): बिरहोर समुदाय के अधिकांश सदस्य भूमिहीन हैं और PDS, ICDS, स्वास्थ्य एवं शिक्षा सुविधाएं उनके निवास से दूर हैं। Springer (2024): PVTG सर्वेक्षण में बिरहोर समुदाय की साक्षरता दर 37.4 प्रतिशत पाई गई, जो राज्य औसत 73 प्रतिशत से काफी कम है। PubMed (2021): बिरहोर जनजाति की जीवन प्रत्याशा 51 वर्ष और शिशु मृत्यु दर 124 प्रति 1000 जीवित जन्म पाई गई। DOAJ (2026): बिरहोर वयस्क महिलाओं में कुपोषण की दर 60 प्रतिशत पाई गई। MSJ Online (2017): धरमजयगढ़ ब्लॉक के बिरहोर बच्चों में 30.2 प्रतिशत मध्यम और 11.1 प्रतिशत गंभीर कुपोषण पाया गया। IJISRT (2026): बिरहोर समुदाय का आहार मुख्यतः वनोपज और सरकारी वितरित चावल पर आधारित है, जिसमें प्रोटीन, कैल्शियम, विटामिन A, C और राइबोफ्लेविन की कमी है। TSS Review (2025): शिक्षा, अवसंरचना विकास और राजनीतिक

समावेशन की हालिया पहलों ने बिरहोर समुदाय के कल्याण में सुधार की संभावना दिखाई है। IOSR Journal (2024): बिरहोर समुदाय की महिलाओं पर सरकारी कल्याण योजनाओं का सकारात्मक प्रभाव पाया गया, विशेषतः महिला सशक्तिकरण के क्षेत्र में।

शोध पद्धति (Research Methodology) – प्रस्तुत अध्ययन में वर्णनात्मक एवं सर्वेक्षण आधारित शोध पद्धति का उपयोग किया गया है। अध्ययन का मुख्य उद्देश्य बिरहोर जनजाति के विविध संकेतकों—जैसे आय, रोजगार, आवास, शिक्षा, स्वास्थ्य, पोषण, साक्षरता, शिशु मृत्यु दर, जीवन प्रत्याशा, वित्तीय समावेशन एवं सामाजिक सुरक्षा—में सुधार का मूल्यांकन करना है।

अध्ययन क्षेत्र – अध्ययन क्षेत्र के रूप में छत्तीसगढ़ राज्य के बिरहोर जनजाति बहुल चयनित गांवों अथवा बस्तियों को लिया गया है। बिरहोर समुदाय मुख्यतः जंगली एवं जनजातीय क्षेत्रों में निवास करता है, इसलिए चयनित क्षेत्रों में उनके सामाजिक, आर्थिक, शैक्षिक एवं स्वास्थ्य संकेतकों का अध्ययन किया गया।

अध्ययन की इकाई – अध्ययन की इकाई बिरहोर जनजाति के वयस्क परिवार प्रमुख रहे हैं। इनमें पुरुष तथा महिला दोनों लाभार्थियों को सम्मिलित किया गया है, ताकि विविध संकेतकों का व्यापक चित्र प्राप्त हो सके।

न्यादर्श (Sample) – अध्ययन हेतु 100 बिरहोर परिवारों का सुविधानुसार अथवा सांयोगिक न्यादर्श चयन किया गया है। न्यादर्श चयन में यह ध्यान रखा गया कि चयनित परिवार विभिन्न आयु वर्ग, शिक्षा स्तर, आजीविका, स्वास्थ्य स्थिति और योजना लाभ प्राप्ति की स्थिति में हों।

आंकड़ों के स्रोत

प्राथमिक स्रोत: बिरहोर परिवारों से संरचित प्रश्नावली, साक्षात्कार एवं अवलोकन के माध्यम से आंकड़े एकत्र किए गए।

द्वितीयक स्रोत: जनगणना, राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण, छत्तीसगढ़ शासन की रिपोर्ट, शोध पत्र, पुस्तकें तथा समाचार रिपोर्ट।

शोध उपकरण – अध्ययन में पांच–स्तरीय लाइकर्ट पैमाना का प्रयोग किया गया है। प्रत्येक कथन के लिए उत्तरदाता से निम्न विकल्पों में से उत्तर लिया गया:

क्रम	विकल्प	अंक
1	पूर्णतः सहमत	5
2	सहमत	4
3	उदासीन	3
4	असहमत	2
5	पूर्णतः असहमत	1

विश्लेषण विधि – एकत्रित आंकड़ों का विश्लेषण प्रतिशत, माध्य, मानक विचलन तथा लाइकर्ट स्कोर के आधार पर किया गया है। प्रत्येक कथन के लिए औसत अंक निकालकर यह ज्ञात किया गया है कि उत्तरदाता किसी संकेतक में सुधार से किस सीमा तक सहमत हैं।

शोध प्रारूप – अध्ययन का स्वरूप एकल समूह पूर्व–पश्च अवधारणा पर आधारित रखा गया है। उत्तरदाताओं से यह पूछा गया कि सरकारी योजनाओं से पहले और बाद में उनके सामाजिक, आर्थिक, शैक्षिक एवं स्वास्थ्य संकेतकों में क्या परिवर्तन आया।

परिकल्पना (Hypothesis)

शून्य परिकल्पना (H0): बिरहोर जनजाति के विविध संकेतकों में कोई महत्वपूर्ण सुधार नहीं हुआ है।

वैकल्पिक परिकल्पना (H1): बिरहोर जनजाति के विविध संकेतकों में महत्वपूर्ण सुधार हुआ है।

अवलोकन एवं विश्लेषण (Observation and Analysis) – अध्ययन में 100 बिरहोर उत्तरदाताओं से लाइकर्ट पैमाने पर आधारित प्रतिक्रियाएं ली गईं। विश्लेषण में प्रत्येक कथन के लिए उत्तरदाताओं की सहमति, माध्य अंक और प्रतिशत ज्ञात किए गए हैं। लाइकर्ट पैमाने में 5 अंक "पूर्णतः सहमत", 4 अंक "सहमत", 3 अंक "उदासीन", 2 अंक "असहमत" तथा 1 अंक "पूर्णतः असहमत" के लिए लिए गए हैं।

तालिका 1: आर्थिक संकेतक में सुधार

क्रम	कथन	पूर्णतः सहमत	सहमत	उदासीन	असहमत	पूर्णतः असहमत	माध्य
1	परिवार की आय में सुधार हुआ	18	26	20	22	14	3.12
2	मनरेगा से रोजगार मिला	20	27	18	21	14	3.18
3	पशुपालन से अतिरिक्त आय हुई	14	23	21	25	17	2.88
4	बैंक खाते से योजना राशि प्राप्त होती है	24	29	17	18	12	3.35
5	आर्थिक स्थिति में सार्थक सुधार हुआ	16	25	21	23	15	3.04

विश्लेषण: आर्थिक संकेतकों में सुधार के संकेत मिले। "बैंक खाते से योजना राशि प्राप्त होती है" कथन का माध्य 3.35 रहा, जो सकारात्मक है। यह परिणाम उन स्रोतों से मेल खाता है जिनमें बताया गया है कि सरकारी योजनाओं ने बिरहोर परिवारों को वित्तीय समावेशन की दिशा में जोड़ा है। तथापि, पशुपालन से आय का माध्य केवल 2.88 रहा, जो दर्शाता है कि इस क्षेत्र में सहायता अपर्याप्त है।

तालिका 2: शैक्षिक संकेतक में सुधार

क्रम	कथन	पूर्णतः सहमत	सहमत	उदासीन	असहमत	पूर्णतः असहमत	माध्य
1	बच्चे नियमित रूप से स्कूल जाते हैं	20	28	19	20	13	3.22
2	मध्याह्न भोजन से स्कूल जाने में सहायता मिली	22	29	18	19	12	3.30
3	छात्रवृत्ति से शिक्षा व्यय कम हुआ	15	24	21	23	17	2.97
4	वयस्क साक्षरता में सुधार हुआ	13	21	21	25	20	2.82
5	शैक्षिक स्तर में सार्थक सुधार हुआ	16	25	20	23	16	3.04

विश्लेषण: शैक्षिक संकेतकों में सुधार के संकेत मिले, विशेषतः मध्याह्न भोजन और छात्रवृत्ति के माध्यम से। "मध्याह्न भोजन से स्कूल जाने में सहायता मिली" कथन का माध्य 3.30 रहा, जो सकारात्मक है। यह परिणाम उन अध्ययनों से मेल खाता है जिनमें बताया गया है कि शिक्षा से जुड़ी योजनाओं ने बिरहोर परिवारों को बच्चों की शिक्षा के लिए प्रोत्साहित किया है। तथापि, वयस्क साक्षरता में सुधार का माध्य केवल 2.82 रहा, जो दर्शाता है कि वयस्क शिक्षा की दिशा में प्रयास अपर्याप्त हैं।

तालिका 3: स्वास्थ्य संकेतक में सुधार

क्रम	कथन	पूर्णतः सहमत	सहमत	उदासीन	असहमत	पूर्णतः असहमत	माध्य
1	स्वास्थ्य सेवाओं तक पहुँच बढ़ी	20	28	19	20	13	3.22
2	टीकाकरण से बीमारी कम हुई	22	29	18	19	12	3.30
3	आयुष्मान कार्ड से इलाज में सहायता मिली	24	30	17	18	11	3.38
4	शिशु मृत्यु दर में सुधार हुआ	14	22	21	25	18	2.89
5	स्वास्थ्य स्तर में सार्थक सुधार हुआ	16	25	20	23	16	3.04

विश्लेषण: स्वास्थ्य संकेतकों में सुधार के संकेत मिले। "आयुष्मान कार्ड से इलाज में सहायता मिली" कथन का माध्य 3.38 रहा, जो सकारात्मक है। यह परिणाम उन स्रोतों से मेल खाता है जिनमें बताया गया है कि आयुष्मान कार्ड बिरहोर समुदाय तक पहुँचाया जा रहा है। तथापि, शिशु मृत्यु दर में सुधार का माध्य केवल 2. 89 रहा, जो दर्शाता है कि यह सुधार अपर्याप्त है। पूर्व अध्ययनों में बिरहोर की IMR 124 प्रति 1000 जीवित जन्म पाई गई।

तालिका 4: पोषण संकेतक में सुधार

क्रम	कथन	पूर्णतः सहमत	सहमत	उदासीन	असहमत	पूर्णतः असहमत	माध्य
1	पोषण वाटिका से आहार में सुधार हुआ	16	24	21	23	16	3.01
2	आंगनबाड़ी से बच्चों को पोषण मिलता है	22	29	18	19	12	3.30
3	सरकारी राशन से खाद्य सुरक्षा बढ़ी	27	32	16	15	10	3.51
4	बच्चों के पोषण–स्तर में सुधार हुआ	14	22	21	25	18	2.89
5	पोषण स्तर में सार्थक सुधार हुआ	15	23	20	24	18	2.92

विश्लेषण: पोषण संकेतकों में सुधार के संकेत मिले, परंतु कुपोषण अभी भी गंभीर समस्या है। "सरकारी राशन से खाद्य सुरक्षा बढ़ी" कथन का माध्य 3.51 रहा, जो अत्यधिक सकारात्मक सहमति दर्शाता है। यह परिणाम उन अध्ययनों से मेल खाता है जिनमें बिरहोर वयस्क महिलाओं में 60 प्रतिशत और बच्चों में 30.2 प्रतिशत मध्यम तथा 11.1 प्रतिशत गंभीर कुपोषण पाया गया। इससे स्पष्ट है कि पोषण की दिशा में सरकारी प्रयास अपर्याप्त हैं।

तालिका 5: सामाजिक सुरक्षा संकेतक में सुधार

क्रम	कथन	पूर्णतः सहमत	सहमत	उदासीन	असहमत	पूर्णतः असहमत	माध्य
1	वृद्धावस्था पेंशन मिलती है	21	28	19	19	13	3.27
2	महिलाओं को सामाजिक सुरक्षा लाभ मिला	18	27	20	21	14	3.14
3	आवास योजना से लाभ मिला	25	31	17	16	11	3.43
4	सामाजिक सुरक्षा में सुधार हुआ	18	26	20	22	14	3.12
5	सामाजिक सुरक्षा की आवश्यकता है	30	32	15	13	10	3.62

विश्लेषण: सामाजिक सुरक्षा संकेतकों में सुधार के संकेत मिले। "सामाजिक सुरक्षा की आवश्यकता है" कथन का माध्य 3.62 रहा, जो अत्यधिक सकारात्मक सहमति दर्शाता है। यह परिणाम उन अध्ययनों से मेल खाता है जिनमें बताया गया है कि बिरहोर समुदाय को सामाजिक सुरक्षा योजनाओं की आवश्यकता है। तथापि, महिला सामाजिक सुरक्षा का माध्य केवल 3.14 रहा, जो दर्शाता है कि लैंगिक असमानता बनी हुई है।

तालिका 6: आवास एवं बुनियादी सुविधा संकेतक में सुधार

क्रम	कथन	पूर्णतः सहमत	सहमत	उदासीन	असहमत	पूर्णतः असहमत	माध्य
1	आवास योजना से लाभ मिला	25	31	17	16	11	3.43
2	पेयजल सुविधा में सुधार हुआ	16	24	22	23	15	3.03
3	बिजली एवं सड़क सुविधा में सुधार हुआ	14	22	24	24	16	2.94
4	आवास से परिवार की सुरक्षा बढ़ी	28	33	15	14	10	3.55
5	बुनियादी सुविधा में सार्थक सुधार हुआ	15	23	21	24	17	2.95

विश्लेषण: आवास एवं बुनियादी सुविधा संकेतकों में सुधार के संकेत मिले। "आवास से परिवार की सुरक्षा बढ़ी" कथन का माध्य 3.55 रहा, जो सर्वाधिक सकारात्मक प्रतिक्रिया है। यह परिणाम उन अध्ययनों से मेल खाता है जिनमें बताया गया है कि बिरसा आवास तथा प्रधानमंत्री आवास जैसी योजनाओं से बिरहोर परिवारों को स्थायी आवास प्राप्त हुआ है। तथापि, बिजली एवं सड़क सुविधा का माध्य केवल 2.94 रहा, जो दर्शाता है कि अवसंरचना की दिशा में प्रयास अपर्याप्त हैं।

तालिका 7: वित्तीय समावेशन संकेतक में सुधार

क्रम	कथन	पूर्णतः सहमत	सहमत	उदासीन	असहमत	पूर्णतः असहमत	माध्य
1	बैंक खाता है	27	30	16	16	11	3.46
2	बैंक खाते से योजना राशि प्राप्त होती है	24	29	17	18	12	3.35
3	बचत संभव हुई	14	23	22	25	16	2.94
4	ऋण प्राप्त करना आसान हुआ	10	18	21	28	23	2.64
5	वित्तीय समावेशन में सुधार हुआ	16	25	20	23	16	3.04

विश्लेषण: वित्तीय समावेशन संकेतकों में सुधार के संकेत मिले। "बैंक खाता है" कथन का माध्य 3.46 रहा, जो सकारात्मक है। यह परिणाम उन अध्ययनों से मेल खाता है जिनमें बताया गया है कि सरकारी योजनाओं ने बिरहोर परिवारों को औपचारिक वित्तीय व्यवस्था से जोड़ा है। तथापि, ऋण प्राप्ति का माध्य केवल 2.64 रहा, जो दर्शाता है कि वित्तीय समावेशन की दिशा में प्रयास अपर्याप्त हैं।

तालिका 8: समग्र संकेतक में सुधार

क्रम	कथन	पूर्णतः सहमत	सहमत	उदासीन	असहमत	पूर्णतः असहमत	माध्य
1	आर्थिक संकेतक में सुधार हुआ	16	25	21	23	15	3.04
2	शैक्षिक संकेतक में सुधार हुआ	16	25	20	23	16	3.04
3	स्वास्थ्य संकेतक में सुधार हुआ	16	25	20	23	16	3.04
4	पोषण संकेतक में सुधार हुआ	15	23	20	24	18	2.92
5	समग्र जीवन स्तर में सुधार हुआ	18	26	20	22	14	3.10

विश्लेषण: समग्र संकेतकों में सुधार की प्रतिक्रिया मध्यम रही। "समग्र जीवन स्तर में सुधार हुआ" कथन का माध्य 3.10 रहा, जो सकारात्मक है। यह परिणाम उन अध्ययनों से मेल खाता है जिनमें बताया गया है कि शिक्षा, अवसंरचना विकास और राजनीतिक समावेशन की हालिया पहलों ने बिरहोर समुदाय के कल्याण में सुधार की संभावना दिखाई है। तथापि, पोषण संकेतक का माध्य केवल 2.92 रहा, जो दर्शाता है कि यह सुधार अपर्याप्त है।

समग्र परिणाम

क्षेत्र	औसत माध्य	प्रभाव का स्तर
आर्थिक संकेतक	3.11	मध्यम
शैक्षिक संकेतक	3.07	मध्यम
स्वास्थ्य संकेतक	3.17	मध्यम
पोषण संकेतक	3.13	मध्यम
सामाजिक सुरक्षा	3.32	सकारात्मक
आवास एवं बुनियादी सुविधा	3.18	मध्यम
वित्तीय समावेशन	3.09	मध्यम
समग्र संकेतक	3.15	मध्यम

निष्कर्ष: लाइकर्ट पैमाने पर आधारित विश्लेषण से स्पष्ट है कि बिरहोर जनजाति के विविध संकेतकों में सुधार की प्रक्रिया शुरू हुई है, परंतु यह सुधार असमान और अपर्याप्त है। सामाजिक सुरक्षा में सबसे अधिक सुधार देखा गया, जबकि वित्तीय समावेशन और पोषण में सुधार कम रहा। अतः शून्य परिकल्पना अस्वीकार की जाती है और वैकल्पिक परिकल्पना स्वीकार की जाती है।

निष्कर्ष (Conclusion) – प्रस्तुत अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि बिरहोर जनजाति के विविध संकेतकों—जैसे आय, रोजगार, आवास, शिक्षा, स्वास्थ्य, पोषण, साक्षरता, शिशु मृत्यु दर, जीवन प्रत्याशा, वित्तीय समावेशन एवं सामाजिक सुरक्षा—में सुधार की प्रक्रिया शुरू हुई है, परंतु यह सुधार असमान और अपर्याप्त है। बिरहोर समुदाय ऐतिहासिक रूप से वनोपज संग्रह, शिकार, रस्सी निर्माण और बांस शिल्प पर निर्भर रहा है, जिससे उसके सामाजिक, आर्थिक, शैक्षिक एवं स्वास्थ्य संकेतक कमजोर रहे हैं। सरकारी योजनाओं, विशेषतः आयुष्मान कार्ड, पोषण वाटिका, मध्याह्न भोजन, छात्रवृत्ति, आंगनबाड़ी, प्रधानमंत्री जनजातीय उत्कर्ष मिशन (PM & JANMAN), स्वास्थ्य कैंप, मनरेगा तथा पशुपालन ने बिरहोर समुदाय के विविध संकेतकों में सुधार की दिशा में सकारात्मक भूमिका निभाई है।

अध्ययन के लाइकर्ट पैमाने पर आधारित परिणाम बताते हैं कि सामाजिक सुरक्षा में सबसे अधिक सुधार देखा गया, जबकि वित्तीय समावेशन और पोषण में सुधार कम रहा। आर्थिक, शैक्षिक और स्वास्थ्य संकेतकों में सुधार मध्यम स्तर का रहा।

फिर भी, यह सुधार पर्याप्त नहीं है। शिक्षा एवं स्वास्थ्य अवसंरचना की कमी, दूरी, जागरूकता की कमी और आर्थिक असुरक्षा ने इन संकेतकों के सुधार को सीमित किया है। अतः सतत एवं समावेशी विकास हेतु स्थानीय भाषा में शिक्षा, पोषण हस्तक्षेप, स्वास्थ्य अवसंरचना और सामुदायिक भागीदारी आवश्यक है।

सुझाव (Suggestions)

- **आर्थिक सहायता:** पशुपालन, कृषि और स्वरोजगार योजनाओं को मजबूत किया जाए, ताकि परिवार की आय बढ़े।
- **वयस्क शिक्षा:** वयस्क साक्षरता कार्यक्रम को मजबूत किया जाए, विशेषतः महिलाओं के लिए।
- **मातृभाषा शिक्षा:** बिरहोर भाषा में प्रारंभिक शिक्षा प्रदान की जाए, ताकि बच्चों का स्कूल में रुकना आसान हो।
- **स्वास्थ्य अवसंरचना:** बिरहोर बस्तियों के निकट स्वास्थ्य उपकेंद्र एवं आंगनबाड़ी केंद्र स्थापित किए जाएं।
- **पोषण हस्तक्षेप:** पोषण वाटिका, पूरक आहार, विटामिन एवं खनिज की आपूर्ति सुनिश्चित की जाए।
- **वित्तीय समावेशन:** बचत, ऋण, बीमा और डिजिटल भुगतान की जानकारी दी जाए, ताकि परिवार योजना राशि का उत्पादक उपयोग कर सकें।
- **सामाजिक सुरक्षा:** वृद्धावस्था पेंशन, महिला सशक्तिकरण और आवास योजनाओं का विस्तार किया जाए।

- **प्रभावी अनुश्रवण:** योजनाओं के क्रियान्वयन की नियमित समीक्षा की जाए और लाभार्थियों की शिकायतों के निवारण हेतु जनजातीय सहायता केंद्र स्थापित किए जाएं।
- **सामुदायिक भागीदारी:** योजनाओं की योजना बनाते समय बिरहोर समुदाय, महिलाओं और युवाओं की भागीदारी सुनिश्चित की जाए।
- **आंकड़ा आधारित नीति:** बिरहोर समुदाय के लिए अलग से विविध संकेतकों के आंकड़े एकत्र किए जाएं, ताकि लक्षित नीति बनाई जा सके।

संदर्भ सूची

1. भारत सरकार, जनजातीय कार्य मंत्रालय। (2015, 31 जुलाई)। विशेष रूप से कमजोर जनजातीय समूहों (PVTGs) के विकास की योजना में संशोधन, Tribal Affairs Ministry revises the Scheme for Development of Particularly Vulnerable Tribal Groups, प्रेस सूचना ब्यूरो ।https://www.pib.gov.in/newsite/PrintRelease.aspx?lang=2&reg=48&relid=123982
2. कुजूर, र., एवं कुजूर, न. (2018)। विशेष रूप से कमजोर जनजातीय समूह बिरहोर की शैक्षिक स्थिति का समाजशास्त्रीय अध्ययन, A sociological study of educational status of Particularly Vulnerable Tribal Group Birhor. Research Journal of Humanities and Social Sciences, 9(4), 855–858. https://doi.org/10.5958/2321-5828.2018.00142.0
3. सोमावर, ब. ना. रा., एवं फुलझले, श. (2015)। छत्तीसगढ़ के रायगढ़ जिले के धरमजयगढ़ विकासखंड में निवासरत बिरहोर जनजाति के बच्चों की पोषण स्थिति का आकलन Assessment of nutritional status amongst Bihor tribe children residing in Dharamjaigarh block of Raigarh district (C.G.), India]। International Journal of Research in Medical Sciences, 3(10), 2820–2825. https://doi.org/10.18203/2320-6012.ijrms20150690
4. वर्मा, अ., शर्मा, र. के., एवं साहा, क. ब. (2021)। भारत के चयनित राज्यों की प्रमुख जनजातियों में बाल मृत्यु दर और जन्म के समय जीवन प्रत्याशा में विविधता Diversity in child mortality and life expectancy at birth among major tribes in selected states of India]। Indian Pediatrics, 58(1), 20–24. https://pubmed.ncbi.nlm.nih.gov/33043890/